स्नातक–हिन्दी (प्रतिष्ठा) – द्वितीय खण्ड

चतुर्थ पत्र – छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

समकालीन हिन्दी – केदारनाथ अग्रवाल (जन्म–1911, निधन–2000)

– डॉ॰ मुन्ना साह

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा को छायावादोत्तर युग की स्थायी उपलब्धी माना गया है, किन्तु कारण परिवेश के प्रति जागरूकता और सामाजिक यथार्थ का गहरा बोध छायावादोत्तर कविताओं में कलात्मक सौष्ठव प्रदान करता है।

सप्तक के बाहर के कवियों में केदारनाथ अग्रवाल की पुस्तक 'युग की गंगा' प्रबुद्ध पाठक वर्ग में अधिक प्रसिद्ध हुई तथा नई काव्य रचना का एक स्पष्ट रूप खड़ा हुआ। जिससे केदारनाथ अग्रवाल अपनी काव्य यात्रा के आरम्भिक दौर में 'बालेंदु' उपनाम से ब्रजभाषा में रचनाएँ करते थे। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं – नींद के बादल, लोक और आलोक, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आईना, गुलमेंहदी, पंख और पतवार, बंबई का रक्त स्नान, हे मेरी तुम, कहें केदार खरी–खरी, अपूर्वा, जो शिलाएँ तोड़ते हैं, आत्मगंध, अनहारी हरियाली, खुली आँखें–खुले डैने, पुष्पदीप, बसंत में हुई प्रसन्न पृथ्वी आदि। केदारनाथ अग्रवाल ने देश विदेश के अनेक कवियों की कविताओं का अनुवाद 'देश–विदेश की कविताएँ' शीर्षक से किया है।

प्रगतिवादी काव्य–धारा के कवियों में केदारनाथ अग्रवाल का प्रमुख स्थान है। उनका समाज के प्रति यथार्थ चिन्तन उनकी काव्य रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है –

"मुझे प्राप्त है जनता का स्वर,
वह स्वर मेरी कविता का स्वर,
मैं उस स्वर से,
काव्य प्रखर से,

युग–जीवन का सत्य लिखूँगा,

मैं उस धन से नहीं बिकूँगा।"

केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में पूँजीवादी व्यवस्था, सामाजिक असमानता, शोषण का विरोध एवं श्रमिक वर्ग का संघर्ष गाथा का स्वर स्पष्ट रूप में प्रकट होता है। 'युग की गंगा' काव्य संग्रह में संकलित कविता 'कोयले' की पंक्तियों को देख सकते हैं –

"जल उठे हैं तन बदन से,

क्रोध में शिव के नयन से।

खा गये निशि का अंधेरा,

हो गयी खूनी सवेरा।"

प्रगतिवादी कवियों की पहुँच समाज के प्रत्येक वर्ग एवं परिस्थितियों तक होती है, इसका प्रमाण केदार जी की कविता 'माँझी न बजाओ वंशी' है –

"माँझी न बजाओ वंशी मेरा मन डोलता

मेरा मन डोलता जैसे जल डोलता"

केदार जी के काव्य की प्राकृतिक सौंदर्य जिसमें सामाजिक सांस्कृतिक सौष्टव की व्यापकता निहित है –

"देख आया चन्द्र गहना।

देखता हूँ दृश्य अब मैं

मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।

एक बीते के बराबर

यह हरा ठिंगना चना,"

प्रकृति के मानवीकरण रूप छायावाद के साथ ही साथ छायावादोत्तर कवियों में भी दिखाई देता है। केदार जी की कविता 'धुप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने' में देखा जा सकता है –

"धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने

मैके में आयी बेटी की तरह मगन है

फूली सरसों की छाती से लिपट गयी है

जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिलि हैं

भैया की बांहों से छूटी भौजाई–सी"

वस्तुतः केदारनाथ अग्रवाल ने शोषण, अन्याय, विषमता आदि याथार्थ को चित्रित करते हुए प्रकृति का सहारा लिया है। उनकी कविताएँ समाज के प्रत्येक वर्ग को स्पर्श करती हैं। वे प्रकृति को नये–नये रंग में रूपायित करना जानते हैं। प्रकृति का मानवीकरण करते हुए उनकी पसिद्ध कविताएँ हैं – बसंती हवा, चन्द्रगहना से लौटती बेर, धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने आदि। धूप, हवा, पानी, नदी, पर्वत, पशु, पक्षी, आदि सबका चित्र उन्होंने अपनी कविताओं में निरूपित किया है।

———————————————— ••• ————————————————